वेदों में दूत और गुप्तचर व्यवस्था

[1]Renu Pandey, [2]Dinesh Prasad

Department of Sanskrit, Armapur Degree College, Kanpur

Abstract

An adminstration meeds a group of messengers and spies for its perfection. They must be honest, steilled to their level best and enthusiatstic as well. Each sort of political system in the world has its own group of these messengers and spies according to the need of the hour. Our Vedic age has a concrete idea of keeping spies and messengers according to their need and nature of work. This study is aimed to help the modern system of keeping spies etc. accordingly.

''गणानां त्वा गणपतिं हवामहे,
कवि कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्वत,
आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम्।।''

वस्तुतः संस्कृत साहित्य में वेदों की सर्वोच्च प्रतिष्ठा है। वेदों की विमल ज्ञानराशि के पावन आधार पर ही भारतीय धर्म तथा सभ्यता का भव्य-भवन प्रतिष्ठित है। भारतीय आचार-विचार, धर्म-कर्म और लोक-जीवन की कार्य पद्धति के लिए वेद दीप्तिमान ज्ञान-शाखा हैं। वेद-स्वरुपा अनवरत प्रवहमाना भव्या मन्दाकिनी के अजस्र स्रोत से राष्ट्र का सम्पूर्ण परिक्षेत्र अभिसिञ्चित होता जा रहा है। इस सम्बन्ध में आचार्य बलदेव उपाध्याय का मत है- "अपने प्रातिभ चक्षु के सहारे साक्षात्कृत-धर्मा ऋषियों के द्वारा अनुभूत आध्यात्मशास्त्रतत्वों की विशाल विमल शब्द राशि का नाम ही वेद है। लौकिक वस्तुओं के साक्षात्कार के लिए जिस प्रकार नेत्र की उपयोगिता है, उसी प्रकार अलौकिक तत्त्वों के रहस्य को जानने के लिए वेद की उपादेयता है।"[१]

इष्ट की प्राप्ति तथा अनिष्ट के परिहार के लिए अलौकिक उपाय बताने वाले ग्रन्थ को वेद कहते हैं। वेद प्रत्यक्ष या अनुमान के द्वारा दुर्बोध तथा अज्ञेय उपाय का ज्ञान स्वयं कराता है। वेदों की महत्ता के सम्बन्ध में इस प्रकार से विचार व्यक्त करते हुए कहा गया है- जो व्यक्ति वेद का अध्ययन तो करता है, पर उसके अर्थ को नहीं जानता वह ठूँठ वृक्ष की तरह केवल भार ढोने वाला ही होता है। जो अर्थ को जानता है, वही सम्पूर्ण कल्याण को भोगता है, और ज्ञान के द्वारा पापों को दूर कर वह स्वर्ग की प्राप्ति करता है।

'स्थाणुरयं भारहारः किलाभूद्
अधीत्य वेदं न विजानाति योऽर्थम्।
योऽर्थज्ञ स सकलं भद्रमश्नुते
नाकमेति ज्ञानविधूतपाप्मा।।'

वेद शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है-

'वेद्यतेज्ञायते लभ्यते वैभिर्धर्मादिपुरुषार्थ इति वेदाः।'

अर्थात् जिसके द्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि पुरुषार्थ चतुष्टय प्राप्त किये जाते हैं, उसे वेद कहते है।

आचार्य सायण ने वेद शब्द के विषय तैत्तिरीय भाष्य भूमिका में स्पष्ट कहा है-

इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ज्ञान, सत्ता, लाभ तथा विचार - इस चारों अर्थों को बतलाने वाली 'विद्' धातु से वेद शब्द की व्युत्पत्ति स्वीकार की है। इस धातु के कारण अधिकरण अर्थ में घञ् प्रत्यय करने से 'वेद' भाष्य सिद्ध होता है।

इस प्रकार वेद का अर्थ है- जिससे सभी मनुष्य, सभी सत्य विधाओं को जानते हैं, जिससे सम्पूर्ण जगत स्थित है, जिससे लौकिक एवं पारलौकिक सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं, तथा जिससे ग्राह्य एवं त्याज्य पदार्थो का विचार किया जाता है, उसे वेद कहा जाता है।

वेदों की विचार सम्पत्ति बहुआयामी है। विभिन्न धर्मशास्त्रीय एवं भारतीय संस्कृति के मूल्यवान पक्षों का जिस प्रकार यहां उद्घाटन किया गया है वैसे ही राजनीतिशास्त्र के विभिन्न विषयों का सन्दर्भ प्राप्त होता है। दूत और गुप्तचर व्यवस्था राजनीतिशास्त्र

Vijnana Bharati

का प्रमुख विषय है जिसके विविध आयामों के दर्शन यहाँ पर होते हैं।

राजा और राज्य प्रशासन के साथ ही दूतों और गुप्तचरों की आवश्यकता अनुभव की गई। राजाओं को दूसरे राष्ट्रों से सम्बन्ध रखने के लिए दूतों की आवश्यकता पड़ी। उनके माध्यम से ही राजा अन्य राष्ट्रों से सन्धि-विग्रह राजनीतिक और आर्थिक आदि सम्बन्ध स्थापित करता था। दूत के माध्यम से ही राजा अन्य राष्ट्रों में अपने शत्रु और मित्रों का पता लगाता था तथा वहाँ की गोपनीय बातों की भी जानकारी प्राप्त करता था। गुप्तचर व्यवस्था अपने राज्य की आन्तरिक स्थिति के आकलन के लिए अत्यावश्यक थी। न्याय और दण्ड-व्यवस्था का आकलन आदि की प्रामणिक सूचना गुप्तचरों द्वारा ही प्राप्त होती थी; अतः दूतों की आवश्यकता सदा अनुभव की गई।

दूत शब्द का प्रयोग वैदिक-काल से प्रचलित है। दूत सन्देशवाहक होता है। वह संदेशों का आदान-प्रदान करता है। अतएव राजशास्त्र प्रणेताओं ने दूत को राजा का मुख और चर को राजा का नेत्र कहा है।[२] सन्देशवाहक के द्वारा दूत राजा का मुख है और राज्य के अन्दर घटित होने वाली सभी घटनाओं को देखना, सुनना और समझना तथा राजा तक पहुँचाने के कारण चर राजा के नेत्र हैं। राजा गुप्तचररूपी आँखों से राज्य की सभी छोटी और बड़ी घटनाओं को देखता है। राजा के सो जाने पर भी दूत और चर अपना कार्य करते रहते हैं। अतः कहा गया है कि राजा के ये दोनो प्रकार के दूत सदा सक्रिय रहते हैं और कभी भी नहीं सोते हैं।[३]

वेदों में दूतों को प्रतिष्ठित और यशस्वी कहा गया है-

दूतेव हि ष्ठो यशसा जनेषु।[४]

इससे ज्ञात होता है कि दूत का स्थान आदरणीय होता था।

दूत, चर विषयक कौटिल्य आदि का मत - मनु, कौटिल्य, शुक्राचार्य और ***कामन्दक*** आदि ने दूतकार्य और चर व्यवस्था पर विस्तृत प्रकाश डाला है। उन्होंने दूतों और चरों की योग्यता, उनकी नियुक्ति, उनके कर्तव्य आदि का विस्तृत वर्णन किया है। उसमें से कुछ अत्यन्त उपयोगी सामग्री यहाँ दी जा रही है।

दूतों और चरों की योग्यता

दूत या राजदूत की योग्यता के विषय में ***मनु*** का कथन है कि वह सभी शास्त्रों का ज्ञाता, चेष्टाओं से हृदयस्थ भावों को जानने वाला, सच्चरित्र, चतुर, कुलीन, राजा का भक्त, पवित्र, स्मरणशक्ति वाला, देश-काल का ज्ञाता, दर्शनीय, निर्भय और उच्चकोटि का वक्ता होना चाहिए -

'दूतं चैव प्रकुर्वीत सर्वशास्त्रविशारदम्।
इङ्गिताकराचेष्टज्ञं, शुचिं दक्षं कुलोद्गतम्।[५]

'अनुरक्तः शुचिर्दक्षः, स्मृतिमान् देशकालवित्।
वपुष्मान् वीतभीर्वाग्मी, दूतो राज्ञः प्रशस्यते।[६]

कामन्दक ने दूत के गुण बताए हैं- निर्भय होकर बोलने वाला, स्मरणशक्तियुक्त, वाग्मी, शस्त्र और शास्त्र दोनों में निपुण और अनुभवी व्यक्ति ही दूत हो सकता है -

प्रगल्भः स्मृतिमान् वाग्मी, शस्त्रे शास्त्रे च निष्ठितः।
अभ्यस्तकर्मा नृपतेर्दूतो भवितुमर्हति।।[७]

महाभारत[८] में भी दूत के यही गुण बताए गये हैं।

दूत के कर्त्तव्य

दूत के प्रमुख कर्त्तव्य इस प्रकार हैं- दूत राजा का प्रतिनिधि होता है।

'दूतमुखा वै राजानः। उद्यतेष्वपि शस्त्रेषु यथोक्तं वक्तारः।[९]

'प्रेषणं सन्धिपालत्वं प्रतापो मित्रसंग्रहः।
उपजापः सुहृद्भेदो दण्डगूढातिसारणम्।
समाधिमोक्षो दूतस्य कर्मयोगस्य चाश्रयः।[१०]

(१) परराष्ट्र में राजा की ओर से सन्धि और विग्रह की बात करना।

(२) परराष्ट्र में राजा का सन्देश पहुँचाना।

(३) प्राणों की बाजी लगाकर भी अपने राजा का सन्देश उसी रूप में शत्रु राजा तक पहुँचाना।

(४) परदेश में भी अपने मित्र बनाना।

(५) शत्रुपक्ष के कार्यकर्त्ताओं में फूट डालना।

(६) शत्रुपक्ष की आन्तरिक न्यूनताओं और रहस्यों को जानना और अपने राजा तक पहुँचाना।

(७) परदेश में अपने गुप्तचरों के कार्य-कलाप का निरीक्षण करना।

(८) अपने राजा की विजय के लिए परदेश में अनुकूल स्थिति बनाना।

(९) दूसरों के कटु वचनों को भी सहन करना।

Vijnana Bharati

(१०) मद्यपान, स्त्री-प्रसङ्ग आदि दुर्व्यसनों से बचना।

(११) अपने राजा के रहस्यों को किसी भी स्थिति में प्रकट न करना।

कौटिल्य ने दूतों की तीन श्रेणियाँ बताई हैं - ***(१) निसृष्टार्थ, (२) परिमितार्थ (३) शासनहर। निसृष्टार्थ*** उच्च श्रेणी का दूत होता था। उसे ***अमात्य*** स्तर के अधिकार प्राप्त थे। उसके कार्य थे- राजा का सन्देश ले जाना, अन्य राजा का सन्देश लाना, राजा की ओर से सन्धि-विग्रह आदि की बात करना। वह एक प्रकार से सर्वाधिकार प्राप्त दूत होता था। ***परिमितार्थ*** दूत की योग्यता और कार्यक्षमता अमात्य की तीन चौथाई होती थी। वह किसी विशेष उद्देश्य के लिए भेजा जाता था। परिमित + अर्थ, अर्थात् सीमित उद्देश्य की पूर्ति करना उसका कार्य होता था। ***शासनहर*** दूत सामान्य दूत होता था। उसका कार्य केवल राजा का सन्देश पहुंचाना आदि था -

१. 'उद्घृमन्त्रो दूतप्रणिधिः। अमात्यसम्पदोपेतो निसृष्टार्थः।

२. पादगुणहीनः परिमितार्थः अर्धगुणहीनःशासनहरः।[११]

गुप्तचरों के कार्य

कौटिल्य ने गुप्तचरों के लिए ***गूढपुरुष*** शब्द का प्रयोग किया है '***गूढपुरुषान् उत्पादयेत्।***[११] उन्होंने गुप्तचरों के भी दो वर्ग किये हैं- (१) ***संस्थ***- एक ही स्थान पर रहकर कार्य करने वाले अर्थात् स्थान-विशेष से सम्बद्ध। (२) ***सञ्चारी***-दूर दूर तक घूमकर कार्य करने वाले।

इनकी योग्यता आदि के विषय में कहा है कि ***ये दूसरे के मर्म को जानने वाले, बोलने में अति चतुर, प्रगल्भ, वशीकरण, इन्द्रजाल, व्याकरण, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, सामुद्रिक विद्या आदि जानने वाले हों। गुप्तचर विभाग में पुरुष*** और नारी दोनों की नियुक्ति होती थी। ***गुप्तचर विभाग की नारियाँ शकुन-शास्त्र, कामशास्त्र, नृत्य-गीत आदि में निपुण हों।*** वे सभी प्रकार के छल-प्रपञ्च जानती हों। गुप्तचर विभाग के नर और नारी प्रधानमंत्री, अमात्य, सेनापति आदि से लेकर छोटे-से-छोटे अधिकारी के यहाँ नियुक्त होते थे। ये ***ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी, भिक्षुक, तपस्वी तपस्विनी, शूद्रा, विधवा आदि सभी वर्गो से होते थे।***[१३]

'एवं शत्रौ च मित्रे च मध्यमे चापवपेत् चरान्।

उदासीने च तेषां च तीर्थेष्वष्टादशस्वपि।[१४]

'चौरसञ्चारिणः संस्था गूढाश्चागूढसंज्ञिताः।[१५]

गुप्तचर विभाग का कार्य केवल अपराधों का पता चलाना ही नहीं था, अपितु प्रजा के सभी प्रकार के सुख-दुःख का पता चलाना, राजकीय व्यवस्था का जन-साधारण पर प्रभाव, राजकीय व्यवस्था के प्रति जनता की प्रतिक्रिया, अशान्ति और उपद्रवों के कारणों का पता लगाना, प्रजा में अशान्ति और उपद्रवों के कारणों का पता लगाना, प्रजा में शान्ति और आर्थिक समृद्धि का आकलन तथा प्रजा के कष्ट उत्पीड़न आदि का पता चलाना भी गुप्तचर विभाग का कार्य था।

शुक्राचार्य का यह भी कथन है कि राजा का कर्त्तव्य है कि वह गुप्तचर विभाग की सुरक्षा की व्यवस्था करे, जिससे जनता या अधिकारी वर्ग उन्हें तंग न कर सकें-

'प्रकृतिभ्योऽधिकृतेभ्यो गूढचारं सुरक्षयेत्।[१६]

देवदूत

वेदों में ऐसे भी देव हैं जिन्हें देवदूत की उपाधि से अलङ्कृत किया गया है। ***वेदों*** में ***अग्नि देव*** को सर्वश्रेष्ठ दूत होने का श्रेय प्राप्त है। यज्ञ में प्रदत्त ***हवि*** को अग्नि ही दूत के रूप में सभी देवों को पहुँचाता है। ***यजुर्वेद*** का कथन है कि हव्य-वाहक होने के कारण अग्नि दूत है और वह ***पुरोधा*** या ***पुरोहित*** है-

'अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहम्०।[१७]

ऋग्वेद में ***अग्नि*** को सूर्य का दूत कहा गया है -

'होता यद् दूतो अभवद् विवस्वतः।[१८]

अग्नि विशः (जनता) का भी दूत है -

'अग्ने दूतो विशामपि।[१९]

अग्नि सभी देवों का दूत है-

'दूतो विश्वेषां भुवत्।[२०]

वेदों में ***अग्नि*** के अतिरिक्त कुछ पशु-पक्षियों आदि को भी देवों का दूत गिनाया गया है। ऋग्वेद में बादलों को ***वर्षा ऋतु*** का दूत बताया गया है-

'आविर्दूतान् कृणुते वर्ष्यान्।[२१]

यमराज के दो ***कुत्तों*** को ***यम*** का दूत कहा गया है-

'श्वानो - - - - - - -यमस्य दूतौ।[२२]

अथर्ववेद में मृत्यु को यम का दूत बताया गया है -

'मृत्युर्यमस्यासीद् दूतः।[२३]

Vijnana Bharati

कबूतर को निऋति (विपत्ति) का दूत कहा गया है–

'कपोतः - - - - - - -दूतो निऋत्याः। [२४]

ऋग्वेद के एक मंत्र में सूर्य को सारे संसार का दूत बताया गया है–

'तं सूर्य - - - - - - स्पशं विश्वस्य०। [२५]

इससे ज्ञात होता है कि अग्नि, सूर्य आदि देवों के तुल्य पशु-पक्षियों आदि को भी संवाद-संप्रेषण के माध्यम के कारण दूत कहा जाता था। इस प्रकार वेदों में दूत और दूतकर्म का पर्याप्त विशद् वर्णन प्राप्त होता है।

राजदूत

राज्य सञ्चालन में दूत व्यवस्था का विस्तृत उल्लेख वेदों में प्राप्त होता है। वेदों में कतिपय सन्दर्भ ऐसे हैं, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि राजा अपना सन्देश दूतों के माध्यम से दूसरे राजा तक पहुँचाता था। वेद में सन्देश-वाहन के लिए केवल दूत ही नहीं, अपितु दूती का भी उल्लेख है। दूती के द्वारा दौत्य कर्म कराना यह वैदिक ऋषियों की उदात्तता का परिचायक है –

'यस्येदं दूतीरसरः पराकात्। [२६]

इससे नारी के साहस, गौरव दक्षता और कार्यपटुता का ज्ञान होता है।

शतपथ ब्राह्मण में कुछ ऐसे सन्दर्भ आये हैं, जिनसे दूत की उपयोगिता का ज्ञान होता है। एक सन्दर्भ में कहा गया है कि देवता और असुर दोनों ही प्रजापित की संतान हैं। दोनों ही अपनी उत्कृष्टता सिद्ध करने का प्रयत्न करते रहते थे। दोनों के मध्य में ***पृथ्वी गायत्री*** के रूप में उपस्थित हुई। दोनों को ज्ञात था कि पृथ्वी जिसके पक्ष में होगी, उसकी विजय होगी। ***पृथ्वी*** को अपनी ओर करने के लिए दोनों ने अपने-अपने दूत भेजे। ***देवों*** का दूत ***अग्नि*** हुआ और ***सहराक्षस असुरों*** का दूत। अग्नि अपने कार्य में सफल हुआ। अतः पृथ्वी देवों के पक्ष में आ गई और देव विजयी हुए –

'अग्निरेव देवानां दूत आस, सहरक्षा - - - - - असुराणाम्। [२७]

शतपथ ब्राह्मण के दूसरे सन्दर्भ में कहा गया है कि देवों और असुरों ने ***वाणी*** (वाक्) की उपेक्षा की और उसे यज्ञ में भाग नहीं दिया। वाणी ने क्रुद्ध होकर सिंहनी का रूप धारण किया और देवों तथा असुरों को पकड़कर मारना शुरू किया। भयभीत होकर दोनों ने वाणी के पास अपने दूत भेजे। देवों का दूत अग्नि हुआ और राक्षसों का सहराक्षस। अग्नि अपने कार्य में सफल हुआ और वह वाणी (वाक्) को समझाकर देवों के पक्ष में कर सका–

'वाक् चुक्रोध। अग्निरेव देवानां दूत आस, सहरक्षा..असुराणाम्।

- - - - - - सैव देवान् उपावर्त। [२८]

इससे ज्ञात होता है कि किसी भी राजा की सफलता सुयोग्य दूत पर निर्भर होती है। कुशल दूत असाध्या कार्यों को भी साध्य और सुकर बना देता है।

दूत की योग्यता और उनके क्रियाकलाप

वेदों में दूत-कर्म के लिए पुरुष और महिला दोनों की नियुक्त वर्णित है। वेदों में दूतों के गुण-कर्म के विषय में विस्तृत सामग्री प्राप्त होती है। मन्त्रों में दूत शब्द के जो विशेषण दिए गये हैं, उनसे इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। यजुर्वेद के एक मन्त्र में दूत के ये गुण बताए गये हैं–

'स हव्यवाडमर्त्य उशिग् दूतश्चनोहितः।
अग्निर्धिया समृण्वति। [२९]

(१) उशिक् – मेधावी होना चाहिए। (२) ***हव्यवाह***– हव्य के तुल्य सन्देश का वाहक हो। (३) ***चनोहितः*** – चनस् का अर्थ मनुष्य या प्रजा है। वह जनता का हितकारी हो। (४) ***धिया समृण्वति*** – बुद्धि या सूझबूझ से युक्त हो। ऋग्वेद के एक मन्त्र में दूत के इन गुणों का उल्लेख है –

'मन्द्रो होता गृहपतिरग्ने दूतो विशामसि। [३०]

(१) ***विशां मन्द्र***– प्रजा का हर्षवर्धक हो। (२) ***गृहपति*** – अग्नि के तुल्य अपने गृह अर्थात् स्वराष्ट्र के हितों का रक्षक हो। एक अन्य मन्त्र में दूत को गुण का उल्लेख है–*'महीबृहती शंतमा गीः* [३१] अर्थात् दूत की वाणी बहुत संतुलित एवं शान्त-मुद्रा में हो।

एक अन्य मन्त्र में दूत के दो गुणों का उल्लेख है –

(१) ***क्षपापान्*** – क्षपा अर्थात् पृथ्वी का रक्षक।

(२) ***अतन्द्रः*** – तन्द्रा या आलस्य से रहित हो।

'स हि क्षपापान् - - - - - अतन्द्रो दूतः। [३२]

Vijnana Bharati

ऋग्वेद के एक अन्य मन्त्र में दूत के इन गुणों का उल्लेख है – (१) ***श्रेष्ठः*** – ज्ञान आदि में वह श्रेष्ठ हो। (२) ***यविष्ठः*** – अत्यन्त युवा हो। (३) ***न निन्दिम*** – निन्दनीय न हो। (४) ***महाकुलः***– कुलीन हो, कुलीनता के साथ गम्भीरता, शालीनता, निर्लोभ एवं अलोलुप्तता आदि गुण आते हैं। (५) ***भ्राताः*** – भ्राता या बन्धु के तुल्य दूसरे की सहायता करने वाला हो।

'श्रेष्ठः, यविष्ठः, दूत्यम्, न निन्दिम, महाकुलः भ्रातः। [५३]

दूत की अन्य विशेषतायें बतायी गयी हैं – (१) अजिरः – चुस्त, फुर्तीला और साहस वाला हो। (२) अयः शीर्षा – सिर पर टोप आदि धारण करने वाला हो।

(३) ***मदरेघुः*** – प्रसन्नचित्त रहते हुए अतिशीघ्र कार्य करने वाला हो।

'अजिरो दूतः, अयः शीर्षा मदेरघुः। [५४]

(४) ***दूडभः*** – दूत अवध्य होता है।

(५) ***प्रावीः*** – स्वच्छन्दरूप से सर्वत्र विचरण करने में समर्थ एवं अग्रगामी हो।

'दूडभो विक्षु प्रावीः - - - - - दूतः। [५५]

(६) ***उशन्तौ दूतौ, न दभाय***–दूसरों का हित करने वाला हो।

(७) गोपा – जनता का रक्षक हो।

'उशान्ता दूता न दभाय गोपा। [५६]

(८) ***जन्य*** – जनता का हित करने वाला हो।

(९) ***हव्य*** – आदरणीय, ससम्मान बुलाए जाने योग्य।

'दूतेव हव्या जन्या पुरुत्रा। [५७]

(१०) ***यशसा जनेषु*** – दूत समाज में यशस्वी होता है। उसका सर्वत्र सम्मान होता है।

'दूतेव हि ष्ठो यशसा जनेषु। [५८]

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि दूत के लिए उच्चकोटि की योग्यताएँ निर्धारित की गयी हैं।

गुप्तचर व्यवस्था और उसके कार्यकलाप

संस्कृत साहित्य में गुप्तचरों के लिए चर और चार शब्द प्रचलित हैं। वेदों में गुप्तचर के लिए स्पश् शब्द का अनेक बार प्रयोग हुआ है।

ऋग्वेद के एक मंत्र में कहा गया है कि देवों के ***गुप्तचर (स्पश्)*** सारे संसार में फैले हुए हैं। ये न कहीं रुकते हैं और न कभी आँख बन्द करते हैं –

'न तिष्ठन्ति न निमिषन्त्येते। देवानां स्पश इह ये चरन्ति। [५९]

ऋग्वेद के एक अन्य मंत्र में राजा वरुण के गुप्तचरों का वर्णन करते हुए गुप्तचरों के इन गुणों और कर्त्तव्यों का उल्लेख किया गया है – (१) ***स्मदिष्टाः*** – सन्देशवाहक। (२) ***उभे पश्यन्ति*** – ये धरती और आसमान सब जगह की घटनाओं पर दृष्टि रखते हैं। (३) ***ऋतावानः***– सत्यवादी और ईमानदार हों। (४) ***कवयः*** – ज्ञानी एवं निष्णात हों। (५) ***प्रचेतसः*** –बड़ी सूझबूझ वाले हों।

परि स्पशो वरुणस्य स्मदिष्टा, उभे पश्यन्ति रोदसी सुमेके।
ऋतावानः कवयो यज्ञधीराः, प्रचेतसो य इषयन्त मन्म।। [६०]

अथर्ववेद के ही एक अन्य मन्त्र में गुप्तचरों के ये गुण–कर्म बताये गये हैं–

(१) ***मधुजिह्वाः*** – मदुरभाषी (२) ***असश्चत*** – अप्रतिहतगति अर्थात् जो सब जगह जा सकते हैं। (३) ***न निमिषन्ति*** – सदा सावधान, कभी न सोने वाले (४) ***भूर्णयः*** – कर्मठ, सदा चुस्ती से काम करने वाले। (५) ***पाशिनः*** – पाशधारी, जिनके पास अपराधी को बाँधने के लिए बेड़ियाँ आदि हैं।

'मधुजिह्वा असश्चतः। अस्य स्पशो न निमिषन्ति भूर्णयः।
पदे पदे पाशिनः सन्ति सेतवे। [६१]

ऋग्वेद के ही एक अन्य मंत्र में गुप्तचरों के कुछ अन्य गुण–कर्मों का उल्लेख है। ये हैं– (१) ***इषिरासः*** – प्रसन्नचितं सदा प्रसन्न मुद्रा में रहने वाले। (२) ***अद्रुहः*** – किसी से व्यक्तिगत द्वेष न रखने वाले (३) ***स्वश्च***– शुद्ध आचार–विचार वाले, सच्चरित्र। (४) ***सुदृशः*** – देखने में सुरूप एवं सब बातों में सूक्ष्म दृष्टि से देखने वाले। (५) ***नृचक्षसः*** – प्रत्येक व्यक्ति को बारीकी से देखने वाले।

'इषिरासो अद्रुहः स्पशः स्वश्चः सुदृशो नृचक्षसः। [६२]

एक मंत्र में सूर्य को सारे संसार का गुप्तचर कहा गया है–

'तं सूर्य - - - - - - स्पशं विश्वस्य जगतो वहन्ति। [६३]

अतः प्रत्येक शुभ और अशुभ कर्मों का फल सम्बद्ध व्यक्ति को अवश्य मिलता है।

Vijnana Bharati

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वैदिककाल में दूत और गुप्तचर व्यवस्था पर पर्याप्त चिन्तन हुआ था। इन महत्त्वपूर्ण विचारों को आधार मानकर हमारा राष्ट्र राजनीतिक क्षितिज पर महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर सकता है।

सन्दर्भ-

१. वैदिक साहित्य और संस्कृति- आचार्य बलदेव उपाध्याय, वाराणसी, पृ० ३।

२. दूतमुखा वै राजानः। कौटिल्य, पृ० ६०

चारचक्षुनरेन्द्रस्तु० । कामन्दकीय नीति । १३.३१।

३. अस्य स्पशो न नि मिषन्ति भूर्णयः। ऋग्० ९.७३.४।

स्वपन्नपति हि जागर्ति चारचक्षुर्महीपतिः। काम०, १३.२९।

४. ऋग० १०.१०६.२

५. मनु० ७.६३

६. मनु० ७.६४

७. काम० १३.२

८. शान्ति० ८५.२८

९. कौटि० पृ. ६

१०.कौटि० पृ. ६३

११.कौटि० पृ. ५९

१२.कौटि० पृ. ३५

१३.कौटि० पृ. ३९-४३

१४.कौटि० पृ. ४२

१५.कौटि० पृ. ४३

१६.शुक्र० १.३४०

१७.यजु० २२.१७

१८.ऋग्० १.५८.१

१९.ऋग्० १.३६.५

२०.ऋग्० ४.९.२

२१.ऋग्० ५.८३.३

२२.ऋग्० १०.१४.११-१२

२३.अ० १८.२.२७

२४.अ० ६.२७.१

२५.ऋग्० ४.१३.३

२६.ऋग्० १०.१०८.३

२७.शत० १.४.१.३४

२८.शत० ३.५.१.२१-२२

२९.यजु० २२.१६

३०.ऋग्० १.३६.५

३१.ऋग्० ५.४३.८

३२.ऋग्० ७.१०.५

३३.ऋग्० १.१६१.१

३४.ऋग्० ८.१०१.३

३५.ऋग्० ४.९.२

३६.ऋग्० ७.९१.२

३७.ऋग्० २.३९.१

३८.ऋग्० १०.१०६.२

३९.ऋग्० १०.१०.८, ऋग्० १८.१९

४०.ऋग्० ७.८७.३

४१.अ० ५.६.३ ऋग्० ९.७.३४

४२.ऋग्० ९.७३.७

४३.ऋग्० ४.१३.३

Vijnana Bharati